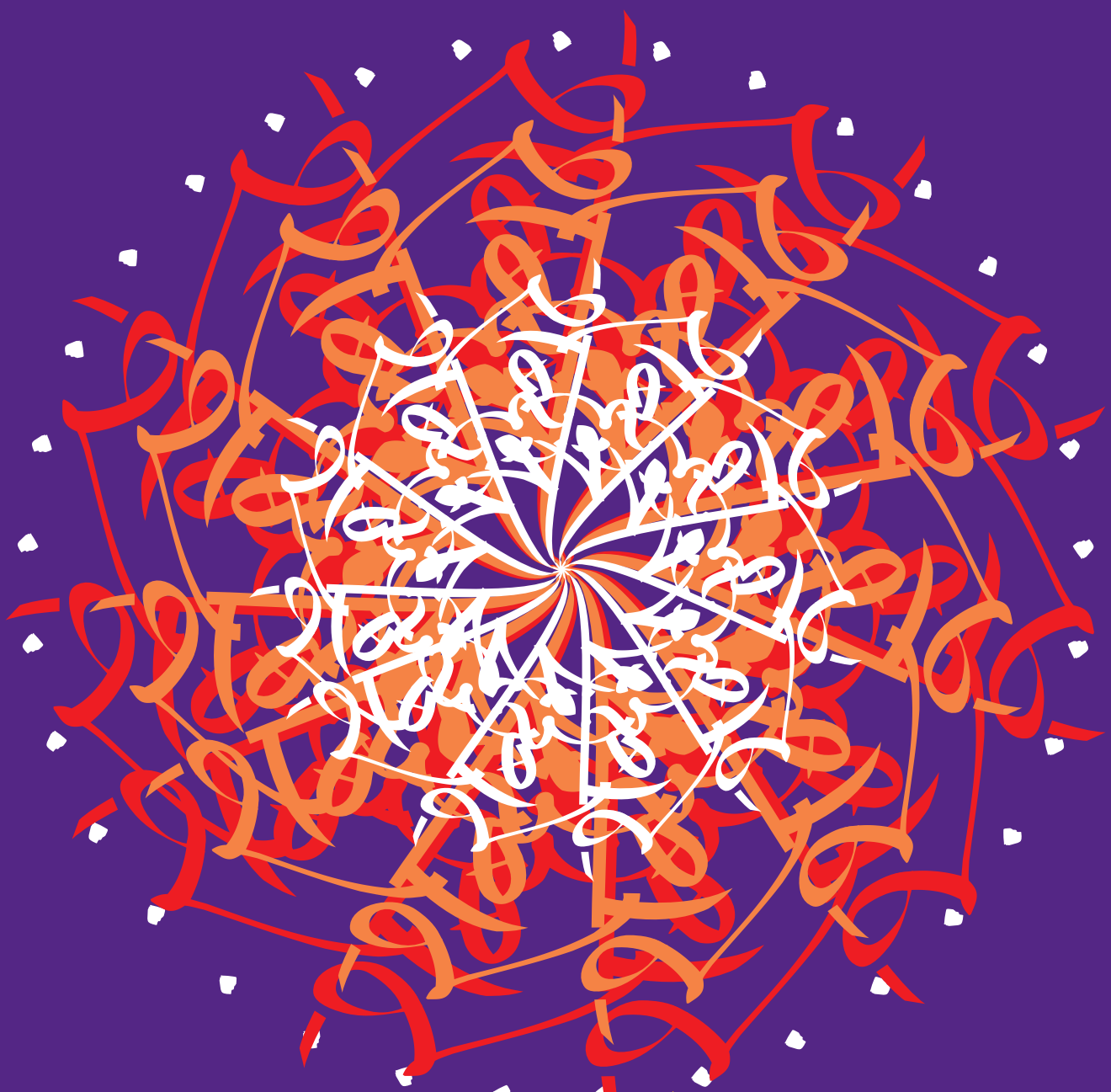

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्द

चरण ३: २००६-०७

शब्द शक्ति की आराधना के लिए

'शब्दम' ध्वनि, नाद और अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है। इसके व्यापक क्षेत्र के अन्तर्गत विविध साहित्य-संगीत-कला स्वत: ही आ जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर माँ शारदा की कृपा से १७ नवम्बर २००४ को इस संस्था (शब्दम्) का गठन शिकोहाबाद (उ.प्र.) में हुआ।

उद्देश्य

१. हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की उच्चस्तरीय रचनाओं और नव लेखन को बढ़ावा देना तथा उपलब्ध साहित्य को जन साधारण के सामने प्रस्तुत करना।

२. विविध भारतीय ललित कलाओं एवम् संगीत को प्रोत्साहित करना।

३. राष्ट्र भाषा हिन्दी के गौरव के लिए प्रयास करना।

४. हिन्दी को शिक्षण और बोलचाल के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाना।

५. हिन्दी को रोजी-रोटी प्राप्त करने की भाषा बनाना तथा सब तरह के कारोबार में इसके प्रयोग को बढ़ावा देना।

६. भारत की एकता के लिए हिन्दी की सेवा करना।

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

चरण ३ : २००६-०७

नियामक मंडल

अध्यक्ष

किरण बजाज

उपाध्यक्ष

नन्दलाल पाठक

उदयप्रताप सिंह

सोम ठाकुर

विशिष्ट सलाहकार

शेखर बजाज

बालकृष्ण गुप्त

स्थानीय सलाहकार

उमाशंकर शर्मा

डॉ. धुर्वेन्द्र भदौरिया

डॉ. महेश आलोक

डॉ. शशिकांत पाण्डेय

मंजर उल वासे

संपादन-प्रकाशन

मुकुल उपाध्याय

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित
शब्दम्

अनुक्रम

अध्यक्षीय निवेदन ३

लोकगीत गायन ४

अपनी हिन्दी को जानिए ५

''सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'' ६

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की याद ७

''धक्का दिया था हमने डुबोने के वास्ते'' ९

''दोष बगुले ढूंढते हैं, हंस के भी आचरण में'' १४

हिन्दी दिवस १७

शब्दम् तृतीय स्थापना दिवस समारोह १८

''मन्दिर में जो कैद तुम्हारे वह मेरा भगवान नहीं है'' २१

श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर, वर्धा
शताब्दी समारोह- चित्रों में २५

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित
शब्दम्

अध्यक्षीय निवेदन

शब्दम् की विकास यात्रा का यह तीसरा पड़ाव है। यहाँ पहुंचकर जब हम अपनी अब तक की यात्रा का सिंहावलोकन करते हैं तो हमें सन्तोष भी होता है और आगे बढ़ने की प्रेरणा भी मिलती है।

मुम्बई फिर उत्तर भारत और अब महाराष्ट्र में हमने अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार किया है। महात्मा गांधी और विनोबा की तपोभूमि वर्धा में भी हमने इस साल महत्वपूर्ण साहित्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया। सर्वश्री सोम ठाकुर, उदयप्रताप सिंह जैसी महान विभूतियों का सदा की तरह इस साल भी हमें पूरा सहयोग मिला। हमारे कार्यक्रमों में जनता की भागेदारी प्रशंसनीय रही।

हिन्दी का प्रचार लगातार हो रहा है। बाढ़ का पानी शरद ऋतु तक आते-आते निर्मल हो जाता है। भाषा और साहित्य को भी प्रचार और प्रसार के बाद उद्धार और सुधार युग से गुजरना पड़ता है। शब्दम् इस दिशा में जागरूक है और अपने कार्यक्रमों का साहित्यिक स्तर बनाए रखने में सफल हुआ है। इससे औरों को भी प्रेरणा मिलती है और स्तरहीन कार्यक्रमों को सुधरने का अवसर मिलता है। यदि साहित्यिक प्रतिभाओं का सहयोग हमें इस तरह आगे भी मिलता रहा तो हमें विश्वास है कि अपनी आस्था और लगन के बल पर हम और अच्छे उदाहरण प्रस्तुत कर सकेंगे।

वर्ष २००७-२००८ का एक विशेष महत्व और भी है। यह वर्धा के श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर की

प्राणप्रतिष्ठा का शताब्दी वर्ष है। देश का यह पहला मंदिर है जो वर्ष १९२८ में स्व. जमनालाल बजाज द्वारा दलितों के लिए खोला गया था। शताब्दी समारोहों के अंतर्गत विभिन्न सांस्कृतिक, सहित्यिक व भक्ति रस के कार्यक्रम आयोजित किए गए। 'शब्दम्' की अध्यक्ष के साथ-साथ श्री लक्ष्मीनारायण देवस्थान ट्रस्ट की ट्रस्टी होने के नाते इन कार्यक्रमों में शब्दम् की ओर से मैंने विशेष रूचि ली।

साहित्य का जगत बहुत ही व्यापक है। विधाएँ अनेक हैं। हम युवावर्ग से लेकर प्रबुद्ध वर्ग तक इन विधाओं को ले जाने के प्रयास में लगे हुए हैं। हम सहयोगियों और सहयात्रियों के आभारी हैं। आशा है, हमें आगे भी उनका योगदान मिलता रहेगा।

करण बजाज

लोकगीत गायन

- **कार्यक्रम :** लोक गीत गायन
- **दिनांक :** ३० नवम्बर, २००६ **समय:** पूर्वान्ह ११:०० बजे **स्थान:** ज्ञानदीप सी.सेके. पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद (उ.प्र.)
- **संयोजन :** शब्दम् एवं स्पिक मैके
- **आमन्त्रित लोकगायिका:** पद्मभूषण श्रीमती तीजन बाई

साहित्य–संगीत–कला को समर्पित संस्था 'शब्दम्' एवं स्पिक मैके के सहयोग से दिनांक ३० नवम्बर, २००६ को शिकोहाबाद नगर स्थित ज्ञानदीप सी.सेके. स्कूल में पांडवानी शैली की विश्व प्रसिद्ध लोक गायिका पद्मभूषण श्रीमती तीजनबाई द्वारा लोक गीत गायन कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

अपनी हिन्दी को जानिए

- **कार्यक्रम:** 'अपनी हिन्दी को जानिए' प्रश्नमंच प्रतियोगिता
- **दिनांक:** २२ दिसम्बर, २००६ ● **समय:** पूर्वान्ह ११:०० बजे ● **स्थान**: ग्राम माढ़ई
- **संयोजन:** शब्दम्
- **प्रतिभागीगण:** शिकोहाबाद, फिरोजाबाद, मैनपुरी, कन्नौज, कानपुर एवं लखनऊ के महाविद्यालयों के एन.सी.सी. कैडेट्स

'शब्दम्' द्वारा दिनांक २२ दिसम्बर, २००६ को ग्राम माढ़ई में शिकोहाबाद, फिरोजाबाद, मैनपुरी, कन्नौज, कानपुर एवं लखनऊ के महाविद्यालयों के एन.सी.सी. कैडेट्स के १० दिवसीय शिविर में 'अपनी हिन्दी को जानिए' प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर एन.सी.सी. अधिकारी मेजर जे.पी. सिंह ने हिन्दी की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा, 'वर्तमान समय में हिन्दी की स्थिति गिरती जा रही है। प्रत्येक व्यक्ति अंग्रेजी सीखने का पक्षधर है तथा चाहता है कि उनके बच्चे अंग्रेजी स्कूल में पढ़कर अंग्रेजी सीखें। लेकिन वे अच्छी अंग्रेजी नहीं सीख पाते हैं। साथ ही हिन्दी से भी वंचित रह जाते हैं। शब्दम् द्वारा किये जा रहे हिन्दी उत्थान के प्रयास वास्तव में सराहनीय हैं।'

'अपनी हिन्दी को जानिए', कार्यक्रम में विचार व्यक्त करते एन.सी.सी. अधिकारी मेजर जे.पी. सिंह

''सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा''

- **कार्यक्रम:** राष्ट्रगीत गायन
- **दिनांक:** १ जनवरी, २००७ • **समय:** प्रात: ९:३० बजे • **स्थान:** स्पोर्ट्स फील्ड, हिन्द परिसर, शिकोहाबाद
- **संयोजन:** शब्दम्
- **आमन्त्रित कलाकार:** डिम्पी मिश्रा

'शब्दम्' द्वारा हिन्द परिसर स्थित खेल के मैदान में नववर्ष के आगमन पर विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों को राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत एवं देशभक्ति गीत का अभ्यास कराया गया।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम भारतेन्दु नाट्य अकादमी के स्नातक डिम्पी मिश्रा के कुशल निर्देशन में हुआ। उन्होंने उपस्थित विद्यार्थियों को राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत एवं 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' आदि देशभक्ति के गीतों का अभ्यास कराया तथा शिक्षकगणों से निवेदन किया कि वे नियमित रूप से इसका अभ्यास करायें। उपस्थित छात्र–छात्राओं के सामूहिक गायन से सम्पूर्ण वातावरण राष्ट्रीय चेतना से भर गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हिन्द लैम्प्स के कार्यकारी निदेशक ए.पी. शर्मा ने बच्चों से कहा कि 'बचपन में जो संस्कार, जो आदतें या जो मित्र हमें मिलते हैं, वे आजीवन हमारे साथ रहते हैं। वैसे तो जीवन में बहुत से लोग मिलते हैं लेकिन बचपन के मित्र एवं अच्छे संस्कार आजीवन साथ रहते हैं। इसलिए सभी विद्यार्थी प्रण करें कि वे अच्छे संस्कार ग्रहण करेंगे।'

कार्यक्रम में हिन्द परिसर स्थित शिक्षा प्रकाशालय एवं माधौगंज के विवेकानन्द विद्यापीठ, संत रावतपुरा सरकारी विद्यालय, डी.आर. पब्लिक स्कूल आदि विद्यालयों के छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन शशिकान्त पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर समस्त विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकगण उपस्थित थे।

राष्ट्रगीत गायन कार्यक्रम में देशभक्ति गीत का अभ्यास कराते डिम्पी मिश्रा

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की याद

- **कार्यक्रम:** 'अन्धेर नगरी रीमिक्स' नाटक मंचन
- **दिनांक:** ५ जनवरी, २००७ ● समय : सायं ६:०० बजे ● **स्थान:** स्टाफ क्लब, हिन्द परिसर, शिकोहाबाद
- **संयोजन:** शब्दम्
- **आमन्त्रित कलाकार:** शिक्षा प्रकाशालय पू.मा. विद्यालय के विद्यार्थी
- **निर्देशन:** डिम्पी मिश्रा, स्नातक, भारतेन्दु नाट्य अकादमी

'शब्दम्' द्वारा आयोजित 'नाट्य कार्यशाला' के अन्तर्गत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित नाटक 'अन्धेर नगरी चौपट राजा' से प्रेरित नाटक 'अन्धेर नगरी रीमिक्स' का मंचन दिनांक ५ जनवरी २००७ को हिन्द परिसर स्थित स्टाफ क्लब में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ कैफ़ी आज़मी द्वारा रचित गीत 'हम वो दीपक हैं जो आंधी में जला करते हैं' से हुआ। इसके बाद शिक्षा प्रकाशालय के छात्र–छात्राओं द्वारा नाटक का मंचन किया गया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा लिखे तथा प्रसिद्ध नाटयकर्मी डिम्पी मिश्रा द्वारा निर्देशित इस कालजयी नाटक को नये सन्दर्भों में नाट्य शिल्प की नयी विधाओं के साथ प्रस्तुत किया गया। नाटक का उद्देश्य राजनीतिक अस्थिरता तथा पाश्चात्यता और बाज़ारवाद से उत्पन्न

'अंधेर नगरी रीमिक्स' का भावपूर्ण दृश्य

'अंधेर नगरी रीमिक्स' के अन्य दृश्य

विसंगतियों की ओर ध्यान आकर्षित करना था। कार्यक्रम का समापन शायर इकबाल द्वारा लिखित देशभक्ति–गीत 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' से हुआ। बाल कलाकारों की प्रस्तुति ने सभी दर्शकों का मन मोह लिया।

कार्यक्रम के कलाकारों में प्रियंका यादव, शरद कमल, रोहित कुमार, ध्रुव कुमार, दिशा पाराशर, आरती यादव, राखी यादव, अशोक कुमार, प्रेम कुमार, मोहन, शान्तनु दीक्षित, फाल्गुनी दीक्षित, उज्ज्वल यादव, उत्कर्ष, लवली, नेहा यादव, योगेश यादव, अवधेश कुमार, आकांक्षा चौहान तथा कोरस में सौम्या रघुवंशी एवं कु. महिमा आदि प्रमुख थे।

'अंधेर नगरी रीमिक्स' का आनन्द लेते दर्शकगण

कार्यक्रम में हिन्द लैम्प्स के अधिका–रीगण एवं कालोनी–वासियों के अतिरिक्त माधौगंज के आवासीय विद्यालयों के छात्र एवं अध्यापकगण भी उपस्थित थे।

''धक्का दिया था हमने डुबोने के वास्ते''

- **कार्यक्रम:** हास्य कवि सम्मेलन
- **दिनांक:** १६ जुलाई, २००७ • **समय:** सायं ५:३० बजे • **स्थान:** बिरला मातुश्री सभागार, मुंबई
- **संयोजन:** शब्दम् एवं बजाज इलेक्ट्रिकल्स लि. मुम्बई
- **कार्यक्रम अध्यक्ष:** प्रो. नन्दलाल पाठक
- **आमन्त्रित कविगण:** प्रदीप चौबे, सुभाष काबरा, दिनेश बावरा, आशकरण अटल एवं मदनमोहन 'दानिश'

बजाज इलेक्ट्रिकल्स के स्थापना दिवस पर 'शब्दम्' तथा बजाज इलेक्ट्रिकल्स के संयोजन में एक हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

मुकुल उपाध्याय ने स्वागत परिचय दिया। तत्पश्चात 'शब्दम्' अध्यक्ष किरण बजाज ने आमंत्रित कविगणों को पर्यावरण की दृष्टिसे पौधे भेंट किये। 'शब्दम्' का संक्षिप्त परिचय देते हुए श्रीमती बजाज ने कहा कि ''जमनालालजी बजाज ने खादी ही नहीं, भाषा पर भी पूरा जोर दिया था। उन्होंने कहा था कि राष्ट्रभाषा की प्रगति से ही देश की प्रगति जुड़ी है। हमारी आने वाली पीढ़ी अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी के संदर्भ में पिछड़ रही है। 'शब्दम्' के उदय की यह

प्रो. नंदलाल पाठक द्वारा अध्यक्षीय भाषण तथा कविता पाठ

'शब्दम्' –अध्यक्ष किरण बजाज द्वारा स्वागत भाषण

पृष्ठभूमि है। हिन्दी के उत्थान के लिए अभी तक किये गये कार्य बच्चे द्वारा आसमान को छूने के समान है। इसलिए अन्य संस्थाओं को भी इस क्षेत्र में प्रयास करना चाहिए।''

'शब्दम्' का विस्तृत परिचय देते हुए प्रो. नन्दलाल पाठक ने कहा कि ''हिन्दी के मूलत: तीन स्तम्भ हैं – अवधी, ब्रज और खड़ी बोली। इन तीन स्तम्भों को ध्यान में रखते हुए 'शब्दम्' की स्थापना ब्रज के निकट शिकोहाबाद में की गई और इसके बाद इलाहाबाद, लखनऊ, ब्रज मंडल, आगरा, राजस्थान आदि क्षेत्रों में उ.प्र. हिन्दी संस्थान, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा,

प्रदीप चौबे द्वारा कविता पाठ. मंच पर (बाएं से) मदनमोहन 'दानिश', प्रो. नंदलाल पाठक, आशकरण अटल, दिनेश बावरा एवं सुभाष काबरा

कवि सम्मेलन अध्यक्ष का सम्मान

कवि सम्मेलन के संचालनकर्ता सुभाष काबरा का स्वागत

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर आदि संस्थाओं के सहयोग से कार्यक्रम आयोजित हुए।' पाठकजी ने अपनी ग़ज़ल 'हमने ही सपने बोये थे तब तुम आज फ़सल तक पहुंचे, आँसू बहुत बहाये हमने तब तुम गंगाजल तक पहुंचे; आँखों की सारी सुन्दरता सिर्फ निगाहों में बसती है, वे आंखों वाले अंधे हैं, जो केवल काजल तक पहुंचे' के माध्यम से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

अम्बरनाथ से आमंत्रित युवा कवि दिनेश बावरा ने अब्दुल करीम तेलगी को आधार बनाकर नेताओं पर व्यंग्यपूर्ण तथा भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ रहे प्रभाव को अपनी कविता 'यह सब कुछ वातावरण की देन है, अगर महाभारत के अन्दर कुछ पल की कहानी सुनकर अभिमन्यु चक्रव्यूह तोड़कर कर अन्दर जा सकता है, तो क्या दिन–रात गाना सुनने वाला गाना नहीं गा सकता है; आपका बेटा अन्तिम संस्कार के लिए जब आपको लेकर जाएगा, तो राम नाम सत्य है की जगह कोई फिल्मी गाना गायेगा' प्रस्तुत कर हास्य एवं व्यंग्य का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया।

ग़ज़लकार एवं शायर मदनमोहन 'दानिश' ने अपने शेर 'मुझको तो हर शख्स भला लगता है, बस यही सबको बुरा लगता है, हर तरफ प्यार है इज्जत है यहाँ, ये इलाका तो नया लगता है' 'आज उसीकी दुनिया है जिसको हर साँचे में ढलना आता है, 'तथा ग़ज़ल खेल समझे थे वो चिरागों को, देखो दामन जलाये बैठे हैं' से खूब वाहवाही लूटी।

कार्यक्रम का संचालन कर रहे मुम्बई के कवि सुभाष काबरा ने महिलाओं की गतिविधियों पर चुटकुले प्रस्तुत कर श्रोताओं को खूब गुदगुदाया। आशकरण अटल ने अपनी कविता 'मीडिया और इन्टख्यू के तीन भाग', 'हाइवे के हमदम' एवं 'शाकाहारी कवि अमेरिका में' प्रस्तुत कर श्रोताओं को खूब हंसाया।

ग्वालियर से पधारे वरिष्ठ कवि प्रदीप चौबे ने

खाना, बच्चों पर चुटकुले एवं शेर 'धक्का दिया था हमने डुबोने के वास्ते, अंजाम ये हुआ कि वो तैराक हो गये.' एवं रामलीला पर हास्य कविता सुनाकर लोगों को खूब गुदगुदाया। अन्त में एक कविता 'इस देश में तीन तरह के लोग रहते हैं' पढ़कर वातावरण को संजीदा बना दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ कवि प्रो. नन्दलाल पाठक ने मुम्बई के गतिमान जीवन पर रचित अपनी चिन्तनमयी कविता 'यह तुम्हारा प्रश्न कैसी बम्बई है, देखता हूँ एक उलझन बन गया है, बम्बई है या कि जैसे भ्रम्मई है ' पढ़ समस्त मुम्बईवासियों को यथार्थ जीवन के बदलते अर्थ को बताया।

कार्यक्रम के अन्त में संचालक सुभाष काबरा ने इस शेर के साथ कार्यक्रम का समापन किया– 'सितारों को आँखों में महफूज़ रख लो, बड़ी दूर तक रात ही रात होगी; मुसाफिर हैं हम भी, मुसाफिर हो तुम भी, किसी मोड़ पर फिर मुलाकात होगी'।

श्रोताओं ने तालियों द्वारा अपना आनंद प्रकट किया

हास्य कवि सम्मेलन में पढ़ी गयी रचनाओं के कुछ अंश

मुझे हर शख्स भला लगता है
बस यही सबको बुरा लगता है
हर तरफ प्यार है इज्ज़त है यहां
यह इलाका तो नया लगाता है.

* * *

आपसे दिल लगाए बैठे है
ख्वाब क्या–क्या सजाए बैठे हैं
जानते हैं नतीजा क्या होगा
शर्त फिर भी लगाए बैठे हैं.

–मदनमोहन 'दानिश'

इस देश में तीन तरह के लोग रहते हैं
एक खून–पसीना बहाने वाले,
दूसरे पसीना बहाने वाले,
और तीसरे खून बहाने वाले.
खून–पसीने वाला रिक्शा चलाता है,
पसीना बहाने वाला घर चलाता है,
और खून बहाने वाला देश चलाता है.
रिक्शा चलाने वाला मजदूर होता है
घर चलाने वाला मजबूर होता है
और देश चलाने वाला मशहूर होता है.

–प्रदीप चौबे

शायर ने सपने बोए थे
तब तुम आज फ़सल तक पहुँचे।
आँसू बहुत बहाए कवि ने
तब तुम गंगाजल तक पहुँचे ।।

* * *

आँखों की सारी सुन्दरता
सिर्फ निगाहों में बसती है।
वे नैनों वाले अन्धे हैं
जो केवल काजल तक पहुँचे।

* * *

मन से मन तक की दूरी को तो
मानव पहले तय कर ले।
फिर चाहे जो भी उड़ान ले
फिर चाहे मंगल तक पहुँचे।

–नंदलाल पाठक

एक बीमार नेता ने लंदन में अंतिम सांस ली
चैनल का रिपोर्टर लंदन पहुंच गया अपनी टीम लेकर
नेताजी के बेटे का इंटरव्यू लिया–
'' क्या इससे पहले भी उन्होंने अंतिम सांस ली थी?''
'' जी, कोशिश तो की थी,
लेकिन डाक्टरों ने लेने नहीं दी ''
''अच्छा, वे लंदन क्यों आए थे ?''
''जी, अंतिम सांस लेने''
''अंतिम सांस लेने के बाद क्या हुआ ?''
''जी, अंतिम सांस लेने के बाद वे मर गए ''
'' क्या उन्हें पता था कि अंतिम सांस लेने के बाद
वे मर जाएगे?''
''जी पता था''
'' जब उन्हें पता था तो उन्होने अंतिम सांस क्यों ली?''
'' जी, राष्ट्रहित में ली''
''क्या इस परंपरा को आगे बढ़ाया जाना चाहिए ?
बाकी नेताओं को भी राष्ट्र हित में मरने के लिए
आगे आना चाहिए ?''

–आशकरण अटल

'' दोष बगुले ढूंढते हैं, हंस के भी आचरण में''

- **कार्यक्रम:** हिन्दी गेय काव्य प्रतियोगिता
- **दिनांक:** १४ सितम्बर, २००७ ●**समय:** पूर्वान्ह ११:०० बजे ●**स्थान:** पालीवाल महाविद्यालय, शिकोहाबाद
- **कार्यक्रम अध्यक्ष:** उमाशंकर शर्मा
- **निर्णायक मण्डल:** डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, मंज़र–उल वासे, साहित्यप्रकाश दीक्षित

दिनांक १४ सितम्बर, २००७ को 'शब्दम्' एवं पालीवाल महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में मातृभाषा हिन्दी को उसका गौरव वापस दिलाने के प्रयासों की श्रृंखला में एक और प्रयास अन्तर विद्यालयीय/महाविद्यालीय 'हिन्दी गेय काव्य प्रतियोगिता' के आयोजन द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष उमाशंकर शर्मा ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण तथा पालीवाल महाविद्यालय के प्राचार्य डा. ओ. पी. सिंह ने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। पालीवाल महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा मां सरस्वती की वन्दना प्रस्तुत की गई।

तत्पश्चात् कनिष्ठ वर्ग में दीक्षा सिंह ने 'माँ की ममता,' व्यास यादव ने वीर रस की कविता, सत्यनारायण ने 'कलियुग कैसी उल्टी गंगा बहा रहा है,' रिंकू ने राधा–कृष्ण वियोग, ज्योति

हिन्दी गेय काव्य प्रतियोगिता में प्रस्तुति करते छात्र शरद बरेजा

हिन्दी गेय काव्य प्रतियोगिता में प्रस्तुति देती छात्रा शिवा मिश्रा

विजयी छात्रा को पुरस्कृत करते उमाशंकर शर्मा

पाण्डेय ने 'बरसों की तू क्यों सोचे,' कु. अनुपम शर्मा ने 'हम रहें न रहें दुनिया रहेगी' अन्जू यादव ने रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता, मनाली अग्रवाल ने 'बचपन की यादें' कविता का पाठन कर वातावरण को आनन्दमय बनाया।

वरिष्ठ वर्ग में शरद बरेजा ने समाज के भ्रष्टाचार पर अपनी ओजपूर्ण कविता सुनाकर श्रोताओं को सोचने पर मजबूर कर दिया। पालीवाल महाविद्यालय की छात्रा शिवा मिश्रा द्वारा प्रस्तुत गीत 'जी रहे हैं लोग कैसे आज के वातावरण में' सुनाकर समस्त श्रोताओं को रसास्वादन कराया। दीक्षा पालीवाल द्वारा प्रस्तुत 'हकीकत में बदलने को सपन भी तो जरूरी है' सुनाते हुए श्रोताओं को शिक्षा दी। नारायण महाविद्यालय के छात्र संदीप सिंह ने देश प्रेम की कविता 'आग कहीं भी लगे लपट से मेरा हिन्दुस्तान जले' सुनाकर देश प्रेम की भावना जागृत की।

पालीवाल महाविद्यालय के प्राचार्य डा. ओ.पी. सिंह ने हिन्दी के उत्थान पर अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि 'प्रत्येक राष्ट्र की उन्नति का मूल कारण उसकी राष्ट्रभाषा होती है। बिना राष्ट्रभाषा उन्नयन के राष्ट्र कभी प्रगति नहीं कर सकता। अनेक देशों जापान, रूस, चीन, फ्रांस आदि ने विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में यदि प्रगति की तो वह अपनी राष्ट्रभाषा में की, न कि अंग्रेजी में; तो हम विज्ञान और तकनीकी प्रगति हिन्दी में क्यों नहीं कर सकते ?'

कार्यक्रम में आमंत्रित निर्णायक मण्डल के सदस्य डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए कहा कि 'अंग्रेजों ने भारतीयों को दबाने के लिए हमारी संस्कृति और राष्ट्रभाषा को समाप्त किया। आज यहां जितने भी प्रतिभागियों ने भाग लिया उन्होंने पुरस्कार जीतने की भावना से नहीं बल्कि हिन्दी की हित भावना से भाग लिया है।' इसके बाद उन्होंने एक स्वरचित कविता का वाचन किया।

निर्णायक मण्डल के एक अन्य सदस्य साहित्य प्रकाश दीक्षित ने अपने वक्तव्य में कहा कि

'स्वतंत्रता के ६०वर्ष के बाद भी हम हिन्दी दिवस को सिर्फ औपचारिकता के लिए मनाते हैं। आज नेता वोट हिन्दी में मांगते और संसद में भाषण अंग्रेजी में देते हैं। हम लोग किसी शादी विवाह का निमंत्रण पत्र भी अंग्रेजी में छपवाते हैं। इससे ज्यादा दुर्दशा हिन्दी की और क्या हो सकती है ? इसलिए यदि हिन्दी को उसका गौरव वापस दिलाना है तो हिन्दी को अपने व्यवहार तथा आचरण में लायें।'

कार्यक्रम के अध्यक्ष उमाशंकर शर्मा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि 'हिन्दी की दुर्दशा को देखते हुए हिन्दी को उसका गौरव वापस दिलाने के लिए 'शब्दम्' की अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज जो प्रयास कर रही हैं, वह वास्तव में प्रशंसनीय है। हिन्दी की प्रगति शिक्षण संस्थाओं से ही सम्भव है।'

कार्यक्रम में पालीवाल महाविद्यालय, ए.के. महाविद्यालय, नारायण महाविद्यालय, ज्ञानदीप सी.सेके. स्कूल, यंग स्कॉलर्स, तारा सिंह इण्टर कॉलेज, गिरधारी इण्टर कॉलेज सिरसागंज, लोक राष्ट्रीय महाविद्यालय जसराना के प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में ए.के. महाविद्यालय के प्राचार्य डा. आर.पी पाण्डेय, नारायण महाविद्यालय के डा. शशिकांत पाण्डेय, डा. महेश आलोक, 'शब्दम्' संस्था के प्रतिनिधि शशिकांत, सुरजीत सिंह सहित काफी संख्या में श्रोतागण उपस्थित थे। कार्यक्रम का सफल संचालन एल. के. शर्मा तथा धन्यवाद ज्ञापन डा. महेश आलोक ने किया।

कार्यक्रम में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा कु. शिवा मिश्रा द्वारा प्रस्तुत कविता

जी रहे हैं लोग कैसे आज के
वातावरण में,
नींद में दिन डूब जाता, रात कटती
जागरण में।

आँख हो बेशर्म यदि तो व्यर्थ घूंघट
क्या करेगा ?
आदमी नंगा खड़ा है, सभ्यता के
आवरण में।

घोर कलियुग है कि देखो राम रावण
बन रहे हैं,
लक्ष्मणों का हाथ रहता आजकल
सीता हरण में।

जल रहे है ढीठ जुगनू, देख यौवन
चाँदनी का,
सीखती है गीत कोयल, बैठ कौओं
की शरण में।

मर रहे हैं सिंह भूखों, घर गधों के खीर
पकती,
दोष बगुले ढूंढते हैं, हंस के भी
आचरण में।

जी रहे हैं लोग कैसे आज के
वातावरण में...

हिन्दी दिवस

१४ सितम्बर २००७ को शब्दम् द्वारा विद्यालयों में आयोजित प्रतियोगिताएं :

१) वर्धा स्थित श्रीकृष्णदास जाजू ग्रामीण सेवा महाविद्यालय में निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसका विषय था ''आज की शिक्षण प्रणाली और विद्यार्थियों का भविष्य''

२) शिकोहाबाद के यंग स्कॉलर्स सी.सेके. स्कूल में निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कनिष्ठ वर्ग में शिखर गुप्ता प्रथम, विशाल शर्मा द्वितीय तथा कात्यायनी तृतीय एवं वरिष्ठ वर्ग में अनुराग सिंह प्रथम, वर्णित दीक्षित द्वितीय तथा पदम सम्भव तृतीय स्थान पर रहे।

३) डी.आर. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, माधौगंज की कहानी लेखन, वाद-विवाद तथा कविता प्रतियोगिता आयोजित की गई। कहानी प्रतियोगिता में रश्मि प्रथम, पुष्पेन्द्र विक्रान्त द्वितीय तथा अभिषेक व अनुपम तृतीय; वाद-विवाद प्रतियोगिता में शिवकान्त प्रथम, मनोज राजौरिया द्वितीय तथा राजुल एवं राजकुमार संयुक्त रूप से तृतीय और कविता प्रतियोगिता में शिवकान्त प्रथम, पुष्पेन्द्र सौरभ यादव द्वितीय तथा मोहित नन्दन एवं सुमित तृतीय स्थान पर।

४) विवेकानन्द विद्यापीठ की निबंध लेखन, कहानी लेखन एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में निबंध लेखन में संदीप यादव प्रथम, आशीष द्वितीय, रामसागर तृतीय, कहानी लेखन में आशीष प्रथम, संदीप द्वितीय तथा शिवम् तृतीय एवं प्रश्नोत्तरी में टीम (अ) शीलू प्रतीक, शुभम, प्रियांशु विजयी रहे।

५) लॉर्ड कृष्णा पब्लिक स्कूल की पोस्टर प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग में संदीप प्रथम, निहित द्वितीय, प्रबल तृतीय एवं वरिष्ठ वर्ग में आकृति प्रथम, विवेक द्वितीय, अश्वनी यादव तृतीय तथा कविता प्रतियोगिता के जूनियर वर्ग में प्राची प्रथम, रजत जैन द्वितीय, हिमांशु बघेल तृतीय एवं सीनियर वर्ग में आकृति प्रथम, मोनिका द्वितीय तथा रोहन सिंह तृतीय स्थान पर रहे।

६) गोमती देवी इन्टर कॉलेज, घातरी की सुलेख प्रतियोगिता के जूनियर वर्ग में कु. पूनम प्रथम, कु. मंजू द्वितीय, कु. प्रेम सरस्वती, सीनियर प्रथम वर्ग में कु. कल्पना प्रथम, कु. उजाला द्वितीय, कु. शिल्पी तृतीय, सीनियर द्वितीय वर्ग में कु. पूनम प्रथम, कु. सुधा द्वितीय तथा कु. सरिता तृतीय स्थान पर रहीं।

७) माधौगंज स्थित सन्त रावतपुरा सरकार स्कूल की निबंध प्रतियोगिता में कु. नीतू यादव प्रथम, कु. बबली द्वितीय तथा कु. सारिका तृतीय स्थान पर रहीं।

८) हिन्द परिसर स्थित शिक्षा प्रकाशालय पू. मा. विद्यालय में चित्र एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

तृतीय स्थापना दिवस समारोह

''हिन्दी को सशक्त करने के लिए हिन्दी के शब्दों का प्रयोग जरूरी''

- **कार्यक्रम:** वरिष्ठ साहित्यकार सम्मान समारोह एवं हिन्दी परिचर्चा
- **दिनांक:** १७ नवम्बर, २००७ ● **समय:** पूर्वान्ह ११:०० बजे से २:३० बजे
- **स्थान:** सभागार – पालीवाल महाविद्यालय, शिकोहाबाद
- **संयोजन:** 'शब्दम्'
- **आमंत्रित कविगण:** लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र', प्रताप नारायण दीक्षित, सोम ठाकुर तथा पवन बाथम

'वरिष्ठ साहित्यकार सम्मान समारोह' में 'शब्दम्' का परिचय देते मंज़र उल वासे

'शब्दम्' स्थापना की तृतीय वर्षगांठ पर 'वरिष्ठ साहित्यकार सम्मान समारोह एवं हिन्दी परिचर्चा' कार्यक्रम आयोजित किया गया। परिचर्चा का विषय था ''हिन्दी का भविष्य एवं भविष्य की हिन्दी''।

कार्यक्रम का प्रारम्भ अध्यक्ष लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र' द्वारा सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। महाविद्याल की छात्राओं शिवा मिश्रा, दीक्षा पालीवाल, उपमा यादव एवं रिजवाना ने सरस्वती वन्दना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

पालीवाल महाविद्यालय के प्राचार्य डा. ओ.पी. सिंह ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हिन्द लैम्प्स के उपाध्यक्ष जे.बी. कंसल का स्वागत एवं 'शब्दम्' अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज का संदेश पाठन किया। किरण बजाज ने अपने संदेश में बताया कि 'स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व महात्मा गांधी ने हिन्दी पर बल दिया था और हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में भी हिन्दी के प्रचार–प्रचार का कार्य शुरू किया था। आज आम जन–मानस अंग्रेजी भाषा बोलने में गौरव और हिन्दी बोलने को छोटा समझने लगा है। इसी मनोवृत्ति का लाभ उठाकर अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के नाम से खुलने वाले विद्यालयों की भरमार हो गई है जो हिन्दी पर उतना बल देते नहीं और अंग्रेजी सिखा पाते नहीं। मैं आशा करती हूँ कि तृतीय स्थापना दिवस का यह आयोजन बीज रूप में हिन्दी भाषा के विकास में प्रस्फुटित हो।'

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जे.बी. कंसल, ने अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि 'आज 'शब्दम्'

के तीसरे स्थापना दिवस के अवसर पर हम लोग उन स्वनामधन्य कवि–साहित्यकारों का सम्मान करने जा रहे हैं जिन्होंने अपने को हिन्दी सेवक के रूप में समर्पित कर अपनी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी जगत में अमिट छाप छोड़ी है। 'शब्दम्' अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज के प्रति हम सभी आभारी हैं, जो कि अपना अमूल्य समय निकालकर हिन्दी की सेवा के लिए समर्पित हैं। इस परिचर्चा में अवश्य ही वर्तमान दौर में हिन्दी के नयेपन, उसके तेवर एवं उसकी समस्याओं पर चर्चा होगी। क्योंकि कम्प्यूटर, इलेक्ट्रोनिक मीडिया, विज्ञापन जगत एवं मनोरंजन के साधनों ने हिन्दी को नये रूप में प्रस्तुत किया है। इस परिचर्चा से सार्थक निष्कर्ष निकलेगा, ऐसी आशा है।'

परिचर्चा प्रारम्भ करते हुए कायमगंज से पधारे कवि पवन बाथम ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'सन् १९३८ में सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था कि भारत में हिन्दी सबसे ज्यादा प्रचलित भाषा है। पराधीन देश में भी हिन्दी स्वतंत्र थी, लेकिन आज स्वतंत्र देश में भी हिन्दी अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रही है। हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है क्योंकि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को भारत में यदि अपने व्यापार में सफल होना है तो सम्पर्क भाषा में हिन्दी का प्रयोग करना ही होगा।' एक श्रोता के अंग्रेजी के हिन्दी अनुवाद में कठिनाई सम्बन्धी प्रश्न पर श्री बाथम ने कहा कि 'कोई भाषा कठिन या सरल नहीं होती। हिन्दी को सशक्त करने के लिए उसके शब्दों का प्रयोग जरूरी है। जब प्रथम बार अंग्रेजी बोली गयी होगी तो काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा, लेकिन आज जब वह प्रचलन में है तो सभी उसे ग्रहण कर रहे हैं।' अपने कविता–पाठन में उन्होंने युवाओं के लिए 'तेरे आने का भान होता है, खुशनुमा आसमान होता है, तुम न निर्जन में मिलो हमसे, दिल बड़ा बेईमान होता है', श्रृंगार रस की 'बदनाम व्यर्थ हो जाएंगे' तथा कन्नौजी

कवि प्रताप नारायण दीक्षित को सम्मान पत्र भेंट करते उमाशंकर शर्मा

कवि लाखन सिंह भदौरिया का सूत की माला से स्वागत

भाषा में लोकगीत 'उठे पूरब से करिया पहाड़, गुइंया घर को चलो' एवं जीवन पर कविता प्रस्तुत कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

आगरा के कवि सोम ठाकुर ने सभी का आभार प्रकट करते हुए कहा कि 'हिन्दी की स्थिति भारत में कुछ बदतर है, लेकिन विदेशों में इसके लिए रास्ते खुले हैं। यह बात सही है कि भारत में रोजगार अंग्रेजी से मिलता है। लेकिन हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है।'

उन्होंने दक्षिण भारत यात्रा के बारे में बताते हुए कहा कि 'भारत के तमिलनाडु में कहा जाता है कि वहां के लोग हिन्दी का विरोध करते हैं लेकिन मैंने वहां के विश्वविद्यालय के निदेशक से पूछा तो उन्होंने कहा कि यह सब राजनीति है। तमिलनाडु के प्रत्येक तीन घरों में हिन्दी की कक्षायें चलती हैं जिनमें लगभग ५०-५० विद्यार्थी पढ़ते हैं।' अमेरिका यात्रा के बारे में बताते हुए कहा कि 'अमेरिका के चर्च एवं मन्दिरों में वहाँ अप्रवासी भारतीय हिन्दी की कक्षायें समूह बनाकर चलाते हैं और हिन्दी सिखाते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है।'

आगरा के वरिष्ठ कवि प्रताप नारायण दीक्षित ने अपने कविता पाठन में खड़ी बोली की कविता 'मेरे जीवन की पुस्तक के पृष्ठ अधिकतर कोरे हैं, जो भी लिखे हुए हैं उनमें पढ़ने लायक थोड़े हैं, जितने भी हैं जैसे भी है भाव हमारे अपने हैं, हमने किसी और के कपड़े धोकर नहीं निचोड़े हैं' 'स्वप्न कैसे आँख में पलने लगे हैं, मालियों से फूल तक जलने लगे हैं,' एवं लोकभाषा गीत 'जे सच है कछु सपना नैहों', 'तुम अपने को समझत का हो, तुम ही कहो कैसे गए गोबर कम और कंडा ज्यादा' प्रस्तुत कर दर्शकों को खूब रसास्वादन कराया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मैनपुरी के वरिष्ठ कवि लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र' ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'हिन्दी मुर्दों की भाषा नहीं, संतों की वाणी है, इसका भविष्य उज्ज्वल है, भविष्य की हिन्दी हमारा ही रूपान्तरण होगी'। तथा अपनी बात को कुछ इस तरह स्पष्ट किया 'पथ उसको कैसे भटकाये जो पथ स्वयं बना सकता है, वर्तमान ही वह क्यों गाये जो भविष्य को गा सकता है'। एवं कविता पाठन में 'नींव में पत्थर समाये हैं, कंगूरों को पता इसका नहीं है; शीश फूलों में चढ़ाये हैं, धतूरों को पता इसका नहीं है' एवं कबीर पर कविता 'ओ यति! जतन से तुम ही ओढ़ सके जिन्दगी की अनमैली चादर को' प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के मध्य में महाविद्यालय की छात्राओं कु. दीक्षा पालीवाल एवं कु. शिवा मिश्रा ने अपनी कविताएं पढ़ीं।

इससे पूर्व कविगण लाखनसिंह भदौरिया, प्रताप नारायण दीक्षित, सोम ठाकुर एवं पवन बाथम का सूत की माला, शॉल, चांदी के नारियल, राशि व प्रशस्ति पत्र मेंटकर सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मंज़र उल वासै तथा धन्यवाद ज्ञापन डा. महेश आलोक ने किया।

''मन्दिर में जो कैद तुम्हारे वह मेरा भगवान नहीं है''

- **कार्यक्रम:** राष्ट्रीय कवि सम्मेलन
- **दिनांक:** ३० सितम्बर, २००७ • **समय:** सायं ६ बजे से ९ बजे
- **स्थान:** गोविन्दराम सेकसरिया वाणिज्य महाविद्यालय सभागार, वर्धा
- **संयोजन:** 'शब्दम्', श्री लक्ष्मीनारायण देवस्थान ट्रस्ट एवं शिक्षा मण्डल, वर्धा
- **आमंत्रित कविगण:** उदयप्रताप सिंह, सोम ठाकुर, प्रो. नन्दलाल पाठक, डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, श्रीमती रागिनी चतुर्वेदी एवं डा. राजेश झा।

हिन्दी माह, श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर के शताब्दी महोत्सव, गांधी जयन्ती के मध्य स्वाधीनता संग्राम की १५०वीं एवं स्वतंत्रता की ६०वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में 'शब्दम्', श्री लक्ष्मीनारायण देवस्थान ट्रस्ट एवं शिक्षा मण्डल, वर्धा के संयुक्त तत्वावधान में एक 'राष्ट्रीय कवि सम्मेलन' का आयोजन किया गया।

श्री हेमचन्द्र वैद्य ने कवियों का स्वागत एवं परिचय दिया। सांसद एवं वरिष्ठ कवि उदयप्रताप सिंह की अध्यक्षता तथा प्रो. नन्दलाल पाठक के मुख्य आतिथ्य में राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। कवियों का स्वागत शेखर बजाज, नारायण जाजू, मुकुल उपाध्याय, भरत महोदय, अम्बिका प्रसाद तिवारी एवं पुष्पा उपाध्याय द्वारा सूतमाला पहनाकर किया गया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ प्रो. नन्दलाल पाठक द्वारा 'शब्दम्' का परिचय एवं अध्यक्ष किरण बजाज द्वारा रचित कविता 'हृदय से हृदय में' के पाठन से किया। तत्पश्चात् सोम ठाकुर के संचालन में इलाहाबाद से पधारीं रागिनी चतुर्वेदी ने मां शारदा

स्वागत: १. शेखर बजाज द्वारा उदयप्रताप सिंह **२.** नारायण जाजू (शिक्षा मण्डल) द्वारा प्रो. नन्दलाल पाठक **३.** मुकुल उपाध्याय (शब्दम्) द्वारा सोम ठाकुर **४.** अम्बिका प्रसाद तिवारी (श्री ल.ना.देवस्थान ट्रस्ट) द्वारा डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया **५.** पुष्पा उपाध्याय (शब्दम्) द्वारा श्रीमती रागिनी चतुर्वेदी

की वन्दना 'प्रथम वन्दना शारदे मां तुम्हारी' पढ़ी तथा अन्य रचनाएं 'चाँदनी भी न भाई तुम्हारे बिना, नींद भी न आई तुम्हारे बिना. 'घटा याद आई, नदी याद आई, तुम्हारी खनकती हंसी याद आई' 'नहीं था मन में कुछ मेरे तुम्हारे प्यार से पहले, अचानक छा गये बादल यहाँ आषाढ़ से पहले' पढ़ श्रोताओं को श्रृंगार–सरिता में डुबकियाँ लगवाई।'

वर्धा के स्थानीय कवि डा. राजेश झा ने अपनी चिन्तनशील रचनाएं 'कैसे अर्पित करूँ मैं श्रद्धा के फूल तुम्हें, मैं स्वयं ही फूल हूँ तुम्हारा लगाया हुआ', 'तुमसे दूर रहकर भी तुम्हारे पास होने का अहसास मेरी सर्वश्रेष्ठ कविता है' एवं 'आज फिर समुन्द्र मंथन हुआ, और बच गया सारा विष फिर किसी विषपायी के लिए' प्रस्तुत कर श्रोताओं को वर्तमान समय में घट रही घटनाओं पर चिन्तन करने के लिए विवश किया।

हेमचन्द्र वैद्य द्वारा स्वागत भाषण

शिकोहाबाद से आमंत्रित कवि डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने भाव प्रधान एवं श्रोताओं में राष्ट्र चेतना के भाव जागृत करने हेतु 'नीर भरी बदली–सी मिट गई महादेवी, मैं महीयसी के नैनों का नीर होना चाहता हूँ. राम की कसम मैं कबीर होना चाहता हूँ'. तथा 'तो आज हमें आज़ाद नहीं मिलता' 'जातियों की सीमा से भी पार गई रोटियाँ' आदि रचनाएं प्रस्तुत कीं जिसका

उदयप्रताप सिंह द्वारा काव्य– पाठ. मंच पर रागिनी चतुर्वेदी, डा. राजेश झा, प्रो. नन्दलाल पाठक, डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया और सोम ठाकुर आसीन हैं.

श्रोताओं ने तन्मयता के साथ आनन्द लिया।
मुम्बई से पधारे वरिष्ठ कवि प्रो. नन्दलाल पाठक ने 'मेरे सीने में जो दिल है, क्या उस दिल में जान नहीं है, मन्दिर में जो कैद तुम्हारे वह मेरा भगवान नहीं है' तथा 'छोटे मुंह–बड़ी बात' कविता पढ़ श्रोताओं की खूब तालियाँ बटोरीं।
आगरा से आमंत्रित कवि सोम ठाकुर ने स्व. श्री जमनालाल बजाज, श्री कमलनयन बजाज एवं श्री रामकृष्ण बजाज को समर्पित अपनी रचना 'कतरे से समुंदर तक गुमनाम सिलसिला हूँ, छोटा हूँ जिन्दगी से पर मौत से बड़ा हूँ' का पाठन किया तथा अन्य रचना 'इस धूल की घाटी में चांदी है न सोना है, आँसू का ठहाका है, मुस्कान का रोना है' पढ़ीं।
उन्होंने अमरीकी साम्राज्यवाद पर तीखा कटाक्ष करते हुए अपनी रचना 'हो गई रे परजा सयानी उतर गया राजा का पानी' प्रस्तुत कर श्रोताओं को खूब रसास्वादन कराया।
कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ कवि एवं सांसद उदयप्रताप सिंह ने नारी अस्मिता को समर्पित अपनी कविता के प्रसंग को इस प्रकार प्रस्तुत किया–त्रेतायुग में सीता हरण के पश्चात् सीता द्वारा रावण को अपमानित करने पर मंदोदरी ने रावण पर व्यंग्य किया कि तुम राम रूप धर कर जाते तो जानकी तुम्हें अवश्य स्नेह करती; इस पर रावण के उत्तर 'जब–जब राम का स्वरूप धरता हूँ मैं, पराई हर नारी मुझे जननी सी लगती' पढ़ा। उन्होंने गाँधीजी के सपनों का भारत होने की कल्पना पर तीखा व्यंग्य करते हुए 'गांधी के अनुयायी भी हैं गांधी के हत्यारे' प्रस्तुत कर श्रोताओं के सामने गांधीजी के सपनों के भारत की दुर्दशा का सजीव ढंग से चित्रण किया।
द्वितीय सत्र में रागिनी चतुर्वेदी ने 'तुमको मेरी

आमंत्रित कवि व आयोजक गण शेखर बजाज के साथ

कसम कोयलिया मत कूक', 'हिचकी' आदि कविताओं का एवं डा. झा ने 'हमारे परवरदिगार का क्या कहना, इधर कुत्ते जी रहे हैं आदमी की तरह, उधर आदमी मर रहा है कुत्ते की तरह' आदि रचनाओं का तथा डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने दो युगों (त्रेतायुग एवं द्वापुर युग) का चित्र 'महात्मा जटायु' कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया।

प्रो. नन्दलाल पाठक द्वारा प्रस्तुत शेर 'शायरी खुदकुशी का धन्धा है, लाश अपनी है अपना कंधा है एवं 'ऑखों की सारी सुन्दरता सिर्फ निगाहों में बसती है, वो ऑखों वाले अंधे है जो केवल काजल तक पहुँचे 'एवं कविता 'मुम्बई' को श्रोताओं ने काफी सराहा।

कार्यक्रम का संचालन कर रहे नवगीतकार सोम ठाकुर ने गज़ल 'क्या बतलायें हमने कैसे साँझ सवेरे देखे हैं, सूरज के आसन पर बैठे घने अंधेरे देखे हैं', 'आ न जाये कहीं नींद इतिहास को, जागरण कीजिए–जागरण कीजिए, शक्ति की सीढ़ियाँ शान्ति मन्दिर चढ़ीं, शंख से बांसुरी का वरण कीजिए.' तथा श्रोताओं की मांग पर अपनी हस्ताक्षर कविता 'मेरे भारत की माटी है चन्दन और अबीर' पढ़ी।

अन्तिम चरण में उदयप्रताप सिंह ने फूल और कली की बातचीत पर कविता 'ये तो तुम्हारी आत्मकेन्द्रित जिन्दगी तो दान और प्राप्ति का अनुबन्ध है, पूरे उपवन का पवन कंधों पर ढोएगा तुम्हें' जिसमें फूल समाज के जीने तथा कली व्यक्ति की जीने का प्रतीक है तथा ग़ज़ल 'चिड़िया बैठ गई' प्रस्तुत कर दर्शकों को कार्यक्रम के अन्त तक बांधे रखा।

कार्यक्रम के अंत मे शब्दम् की ओर से मुकुल उपाध्याय ने अतिथि कवियों एवं श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापन किया।

हृदय

मेरे दृगों का हृदय
निरन्तर तुम्हें टकटकी
लगाकर देखना चाहता है
फिर नयन के हृदय में
गहराई तक डूबना चाहता है
मेरे मन का हृदय
प्रतिक्षण – प्रतिपल
तुम्हारे हर दर्शन का
मनन चाहता है
मेरी वाणी–कर्ण का हृदय
हर समय तुमको सुनना–गाना
चाहता है
फिर
मेरे हृदय का हृदय
तुम्हारे हृदय के हृदय में
अपने आपको समर्पित पाता है.

–किरण बजाज

श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर, वर्धा शताब्दी समारोह-चित्रों में

१०० वर्ष पूरे होते– होते कोई भी मन्दिर तीर्थ स्थान बन जाता है। किन्तु वर्धा का लक्ष्मीनारायण मन्दिर अपने अद्‌भुत इतिहास के कारण बहुत पहले ही तीर्थ बन गया।

२३ जनवरी २००७, बसन्त पंचमी को वर्धा (महाराष्ट्र) स्थित श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर की प्राण प्रतिष्ठा दिवस के १०० वर्ष पूर्ण हो गए। इस मन्दिर के प्रांगण से जुड़ा उसका अपूर्व इतिहास उसे विशिष्ट गौरव प्रदान करता है।

जमनालाल बजाज के दादा बच्छराजजी बजाज ने लक्ष्मीनारायण मंदिर बनवाया। जमनालालजी शुरू से ही संस्कारी थे और ईश्वर पर उनकी पूरी आस्था थी। विनोबाजी और महात्मा गांधी के विचारों का रंग तो उनपर काफी चढ़ चुका था।

जमनालालजी जुट गये कि किस प्रकार लक्ष्मीनारायण मंदिर अस्पृश्यों के लिये खुल जाय। बार–बार समाझने पर अंत में ट्रस्टियों ने मंदिर के द्वार अस्पृश्यों के लिये खोलने का प्रस्ताव पारित कर दिया। यह देश का पहला मंदिर था, जो दलितों के लिए खोला गया। देश के कोने–कोने में इसका स्वागत हुआ। मंदिर के द्वार अस्पृश्यों के लिए खुलना एक अहम कदम था। इतना ही अहम था मंदिर की मूर्तियों की पोषाकों में खादी का इस्तेमाल। गांधीजी के लिए ईश्वर दरिद्रनारायण और दीनबंधु थे। इसलिए भगवान के वस्त्र भी खादी के ही हों यह स्वाभाविक था।

श्री लक्ष्मीनारायणजी की शोभायात्रा पालकी को सैकड़ों श्रध्दालुओं के साथ शेखर व किरण बजाज ने कंधे पर उठाया.

ऐसे ही भगवान का जनता – जनार्दन रूप सोने के ज़ेवरों को भी स्वीकार नहीं कर सकता था, यह भी एक घटना से स्पष्ट हो गया। बजाज परिवार ने भगवान की मूर्तियों को जो गहने पहनाये थे, वे १९४४ में चोरी हो गये। तबसे लक्ष्मीनारायणजी कांचन मुक्त हो गए और खादीधारी भी।

सन १९४२ के ' भारत छोड़ो ' आंदोलन के लिए मुंबई जाने से पहले गांधीजी खासतौर पर इस मंदिर में आये और भगवान के दर्शन करके ही आंदोलन पर निकले।

इन पृष्ठों पर शताब्दी समारोहों में आयोजित कार्यक्रमों के चुने हुए चित्र प्रस्तुत हैं। लोक कला, संगीत नृत्य तथा साहित्य के ये सुरूचिपूर्ण कार्यक्रम बहुत लोकप्रिय हुए।

हवेली संगीत के मध्य स्वत:स्फूर्त किरण बजाज मंदिर के प्रांगण में भक्ति नृत्य करते हुए.

रामनवमी के अवसर पर जे. मधुकर का भजन गायन

हवेली संगीतके अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त गायक ब्रज निवासी हरिबाबू कौशिक ब्रज रसतरंग के अन्य कलाकारों समेत किरण बजाज के साथ.

' ब्रज रसतरंग' कार्यक्रम ने घंटों तक दर्शको को मंत्र मुग्ध रखा

ब्रजरासलीला में फूलोंकी होली का मनोहारी दृश्य

ब्रजरासलीला में राहुल बजाज राधाकृष्ण स्वरूप की पूजा करते हुए

राउल, मीताली तथा बेटी दिया डिसूज़ा
'नृत्य कीर्तनम्' की एक भावपूर्ण मुद्रा में

श्रीराम भारतीय कला केंद्र द्वारा प्रस्तुत 'राम' नृत्यनाटिका का एक दृश्य

श्रीराम भारतीय कला केंद्र द्वारा प्रस्तुत 'राम' नृत्यनाटिका में सीता स्वयंवर का दृश्य

- हिन्दी को देश–विदेश में राष्ट्रभाषा का पूर्ण सम्मान दें।
- हम परस्पर हिन्दी बोलें, सीखें,और पढ़ें।
- अपने गाँव, कॉलौनी एवं शहर में हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे – निबन्ध, कहानी, नाटक, कविता, वाद–विवाद आदि को प्रोत्साहन एवं योगदान दें।
- अपने कारोबार में हिन्दी भाषा को सम्मान और स्थान दें।
- साहित्यिक आयोजनों में भाग लें एवं सहयोग दें।
- हिन्दी शिक्षकों, लेखकों, कवियों, रचनाकारों, कलाकारों को प्रोत्साहित करें।
- हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी, वाचनालय, मुद्रण, विक्रय को बढ़ावा दें।
- विश्व के उत्कृष्ट साहित्य का अनुवाद हिन्दी में एवं हिन्दी साहित्य का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं में कराने में सहयोग करें।

आपके सहयोग, सुझाव एवं योगदान के लिए हम सदैव कृतज्ञ रहेंगे।

“मुझे यह नहीं बर्दाश्त होगा कि हिन्दुस्तान का एक भी आदमी अपनी मातृभाषा को भूल जाए, उसकी हंसी उड़ाए, उससे शरमाए या उसे ऐसा लगे कि वह अपने अच्छे-से-अच्छे विचार अपनी भाषा में नहीं रख सकता.”

सौजन्य:

बजाज

बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड

विश्वास की प्रेरणा